B.A. Part I
Hindi Hons
सूर की भक्ति भावना

1

26/11/20

डॉ० आरती कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
एम०एस०ए० कॉलेज, जहानाबाद

मिल जाते हैं। वैधी भक्ति के अन्तर्गत भागवतकार ने नवधा भक्ति का विवेचन किया है, पर सूर ने स्वामी प्रेम स्वरूपा भक्ति का भी उल्लेख किया है। सूर ने नवधा भक्ति को साधन कहा है और प्रेम स्वरूपा भक्ति को उसका साध्य माना है। यही कारण है कि सूर ने प्रथम छः प्रकार की भक्ति का वर्णन बहुत संक्षेप में किया है। दास्य, सख्य और आत्म-निवेदन का सम्बन्ध मन से है। मन से सम्बन्धित भक्ति ही रस की कोटि तक पहुँचती है।

प्रेमाभक्ति माधुर्य भाव की भक्ति है और गोपियाँ उसका प्रतिनिधित्व करती है। प्रेमाभक्ति का लक्षण अनन्यता है जो सूर की गोपियों में देखी जाती है। प्रेमाभक्ति की प्राप्ति के मुख्य साधन दो हैं— सत्संग और हरिकृपा। सूर ने स्थान-स्थान पर इन दोनों साधनों पर बल दिया है। सदाचार की महिमा भक्तों एवं सन्तों की चरित्र की महिमा आदि का वर्णन इसी संदर्भ में किया गया है। सूर की भक्ति-भावना के विषय में डॉ० हरवंश लाल शर्मा ने लिखा है → "वल्लभ से मिलने के पहले उनका मन स्थिर नहीं था और इसीलिए वे घिघियाते थे। उनके भक्ति विवेचन में उत्तरोत्तर निश्चित रूप से अन्तर प्रतीत होता है। निर्गुण पंथ के प्रति आरम्भ में उनकी सहिष्णुता, उदासीनता में परिणत होती हुई भ्रमर-गीत प्रसंग में पूर्ण विरोध के रूप में फूट निकली है।" पुष्टि सम्प्रदाय में दीक्षित होकर सूर ने 'बालकृष्ण' को ही अपना एकमात्र इष्टदेव, आराध्य माना है। श्रीमद्भागवत में "पोषणं तदनुग्रहः" शब्द आया है, अर्थात् भक्तों के ऊपर भगवान की कृपा का नाम ही पोषण है। आचार्य वल्लभ ने इसी शब्द के आधार पर पुष्टिमार्गीय भक्ति को चलाया, जिसमें भक्त सभी प्रकार से भगवान की कृपा पर आश्रित है। भगवान का अनुग्रह ही भक्त का कल्याण करता है। सूर इसी वल्लभाचार्य के पुष्टिमार्गीय भक्त थे। उन्होंने अपने अनेक पदों में इस भक्ति भावना को व्यक्त किया है। यथा— 'जा पर दीनानाथ ढरै', 'हरि की कृपा जा पर होई' तथा 'जाको दीनानाथ निवाजै' आदि।

सूर की भक्ति-भावना → सूर की भक्ति भावना में हमें क्रमशः स्वामी-सेवक भाव की भक्ति (विनय के पद), वात्सल्य रस की भक्ति, सखा भाव की भक्ति, कान्ता भाव की भक्ति एवं राधा भक्ति के दर्शन होते हैं। सूर ने भक्ति के समस्त अंगों को अपनाकर उन्हें वंदनीय बना दिया है। आत्म-तृप्ति सूर का साध्य था, कोरी कविता नहीं,

क्रमशः —